



शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)

3049-2890 (Print)

IIFS Impact Factor-5.375

Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026

Page No- 219-221

©2026 Shodhaamrit

<https://shodhaamrit.gyanvividha.com>

Author's :

डॉ. अविनाश चन्द्र शुक्ल

प्राचार्य, श्री पंचायती संस्कृत स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय मुण्डेरवा, बस्ती.

विकसित भारत 2047 एवं उसका आधार योग की महत्ता

भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतन्त्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। इस अवसर पर भारत को एक विकसित, आत्मनिर्भर, समृद्ध तथा सांस्कृतिक रूप से सशक्त राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया गया है। “विकसित भारत 2047” केवल आर्थिक उन्नति का लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास का भी व्यापक दृष्टिकोण है। इस महान लक्ष्य की प्राप्ति में योग का विशेष महत्व है। योग भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को संतुलित एवं सशक्त बनाता है।

विकसित भारत 2047 की अवधारणा : विकसित भारत का आशय ऐसे राष्ट्र से है जहाँ—

- आर्थिक समृद्धि हो,
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति हो,
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य की उत्तम व्यवस्था हो,
- सामाजिक समरसता और नैतिकता हो,
- पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास हो,
- नागरिक शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ हों।
- इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

योग का स्वरूप : “योग” शब्द संस्कृत धातु “युज्” से बना है, जिसका अर्थ है-जोड़ना या एकत्व स्थापित करना।

महर्षि पतञ्जलि ने योग को “चित्तवृत्ति निरोधः” कहा है। योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की समग्र पद्धति है। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का समावेश होता है।

विकसित भारत के निर्माण में योग का योगदान :

1. स्वस्थ नागरिकों का निर्माण- किसी भी विकसित राष्ट्र की आधारशिला स्वस्थ नागरिक होते हैं। योग शारीरिक रोगों को दूर कर शरीर को सुदृढ़ बनाता है। नियमित योगाभ्यास से मधुमेह, उच्च रक्तचाप, तनाव आदि रोगों में कमी आती है, स्वस्थ नागरिक राष्ट्र की

Corresponding Author :

डॉ. अविनाश चन्द्र शुक्ल

प्राचार्य, श्री पंचायती संस्कृत स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय मुण्डेरवा, बस्ती.

उत्पादकता बढ़ाते हैं।

2. मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन- आज के आधुनिक जीवन में तनाव, अवसाद एवं चिंता बढ़ती जा रही है। योग मानसिक शान्ति एवं आत्मविश्वास प्रदान करता है। ध्यान और प्राणायाम मन को एकाग्र एवं सकारात्मक बनाते हैं, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमता का पूर्ण विकास कर सकता है।

3. नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास- योग व्यक्ति में अनुशासन, संयम, सत्य, अहिंसा एवं सदाचार जैसे गुणों का विकास करता है। ये गुण समाज में नैतिकता एवं सामाजिक समरसता स्थापित करते हैं। विकसित भारत के लिए नैतिक नागरिक अत्यंत आवश्यक हैं।

4. शिक्षा एवं युवाशक्ति में योग- विद्यार्थियों के लिए योग अत्यंत लाभकारी है। योग स्मरण शक्ति, एकाग्रता एवं आत्मविश्वास को बढ़ाता है। युवा शक्ति राष्ट्र निर्माण की धुरी है और योग उन्हें शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम बनाता है।

5. वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान- आज योग सम्पूर्ण विश्व में भारत की सांस्कृतिक पहचान बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को “अंतरराष्ट्रीय योग दिवस” घोषित किया जाना भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा का प्रमाण है। योग भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करता है।

6. पर्यावरण एवं सतत विकास- योग प्रकृति के साथ सामन्जस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है। योगमय जीवनशैली सादगी, सन्तुलन और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है, जो सतत विकास के लिए आवश्यक है।

विकसित भारत 2047 का स्वप्न तभी साकार होगा जब देश के नागरिक शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त होंगे। योग इस समग्र विकास का सशक्त माध्यम है। अतः योग को केवल व्यक्तिगत अभ्यास न मानकर राष्ट्रीय विकास के आधार के रूप में स्वीकार करना चाहिए। योगयुक्त भारत ही विकसित भारत का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत कर सकता है।

विकसित भारत 2047 एवं उसका आधार योग की महत्ता भारत सरकार का एक महत्वाकांक्षी विज़न है, जिसका उद्देश्य 2047 तक, जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, देश को एक पूर्ण विकसित राष्ट्र (Developed Nation) के रूप में स्थापित करना है। यह दृष्टिकोण केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के हर क्षेत्र में सर्वोच्चता प्राप्त करने पर केंद्रित है।

विकसित भारत 2047 के प्रमुख आधार स्तंभ (Pillars)

आर्थिक विकास: लगभग 30-40 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाना और प्रति व्यक्ति आय में भारी वृद्धि।

समावेशी विकास: समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुंचाना।

युवा शक्ति: युवाओं के कौशल विकास, नवाचार (innovation) और नेतृत्व को बढ़ावा देकर देश निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना।

तकनीक और नवाचार: डिजिटल अर्थव्यवस्था, AI, और आधुनिक बुनियादी ढांचे का विकास।

सुशासन (Good Governance): पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन।

पर्यावरण स्थिरता: हरित ऊर्जा और सतत विकास (Sustainable Development)। विकसित भारत के निर्माण में योग (Yoga) की महत्ताविकसित भारत 2047 के विज़न में योग एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक है, जो ‘स्वस्थ नागरिक – समृद्ध राष्ट्र’ के सिद्धांत का समर्थन करता है:

समग्र स्वास्थ्य (Holistic Health): विकसित राष्ट्र बनने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ कार्यबल (workforce) अनिवार्य है। योग तनाव प्रबंधन, मानसिक शांति और शारीरिक फिटनेस में सुधार करता है, जिससे उत्पादकता (productivity) बढ़ती है।

मानसिक सुदृढ़ता: 2047 के चुनौतियों भरे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए युवाओं को मानसिक रूप से मजबूत होना होगा। योग और ध्यान (meditation) इसमें अहम भूमिका निभाते हैं।

जीवन शैली और रोकथाम: योग जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों (Lifestyle diseases) को रोकने में मदद करता है, जिससे स्वास्थ्य देखभाल पर बोझ कम होता है।

सांस्कृतिक एकता: योग भारत की प्राचीन विरासत है, जो समावेशी विकास और सामाजिक सद्भाव (Social Harmony) को बढ़ावा देती है। निष्कर्षविकसित भारत 2047 का लक्ष्य एक साहसिक और परिवर्तनकारी एजेंडा है जो आर्थिक महाशक्ति बनने के साथ-साथ एक स्वस्थ, शिक्षित और जागरूक समाज की कल्पना करता है। इसमें युवाओं की भागीदारी और योग जैसी जीवनशैली को अपनाकर ही भारत एक सामर्थ्यवान राष्ट्र बन सकता है। “सरकार “विकसित भारत – 2047” विज़न के प्रमुख कारक के रूप में युवाओं को ... – PIB8 Dec 2025 — इनमें युवा नेतृत्व कार्यक्रम, उद्यमिता और नवाचार प्रदर्शन, क्षमता निर्माण, अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम, स्वैच्छिक कार्यक्रम, सामाजिक विकास अभियान और सामुदायिक स...PIB

विकसित भारत के लिए युवाओं को सशक्त बनाना: विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद Translated — भारत के युवा देश की सबसे बड़ी ताकत हैं, जो 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे। विकसित भारत @2047 भारत सरकार की उस महत्वाकांक्षी परिकल्पना का प्रतिनिधित्व करता है जिसके तहत 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी तक देश को एक विकसित राष्ट्र में परिवर्तित...Shyama Prasad Mukherji College विकसित भारत: भारत की आकांक्षाएँ और चुनौतियाँ-संक्षिप्त – brief indiaTranslated-भारत का 2047 का विज़न विकसित भारत की परिकल्पना केवल उच्च आय स्तर तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य 2047 तक विकसित भारत 2047-विज़न, रणनीति और लक्ष्य-विकसित भारत का विचार सरल है। इसका अर्थ है एक मजबूत अर्थव्यवस्था, बेहतर जीवन स्तर और समान अवसरों वाला विकसित भारत। विकसित भारत पर निबन्ध विकसित भारत का सपना हमारे देश की प्रगति और समृद्धि का प्रतीक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पतञ्जलि-पातञ्जलयोगसूत्रम्, व्यासभाष्य सहित, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
2. स्वामी विवेकानन्द-राजयोग, रामकृष्ण मठ, बेलूर मठ।
3. स्वामी शिवानन्द-योगासनों का विज्ञान(The Science of Yoga), Divine Life Society, ऋषिकेश।
4. स्वामी कुवलयाणन्द-योग एवं स्वास्थ्य, कैवल्यधाम, लोनावला।
5. हठयोगप्रदीपिका-स्वात्माराम, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
6. घेरण्डसंहिता, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी। भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर-विशेषतः कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं ध्यानयोग सम्बन्धी अध्याय।
7. श्रीमद्भागवतमहापुराणम्, गीताप्रेस, गोरखपुर-योग, आत्मसंयम एवं आध्यात्मिक जीवन के सन्दर्भ में।
8. चरकसंहिता, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी-स्वास्थ्य एवं जीवनशैली के आयुर्वेदिक आधार के लिए।
9. आयुष मंत्रालय, भारत सरकार-Common Yoga Protocol, नई दिल्ली।
10. नीति आयोग-विकसित भारत@2047(Viksiti Bharat@2047), भारत सरकार-विकसित भारत के लक्ष्य एवं विकास-परिकल्पना के सन्दर्भ में।
11. शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार-राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली-समग्र शिक्षा, भारतीय ज्ञान-परम्परा एवं मूल्याधारित शिक्षा के सन्दर्भ में।

•